eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 04, April 2022

प्लेटो एक प्राचीन राजनीतिक दार्शनिक एवं शिक्षा सिद्धांत

[1]डॉ0 अरविंन्द कुमार शुक्ल
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय, बिंदकी फ़तेहपुर उ0प्र0

Abstract

प्लेटो के लिए शिक्षा जीवन की महान चीजों में से एक थी। शिक्षा बुराई को उसके स्रोत से छूने और जीवन जीने के गलत तरीकों के साथ–साथ जीवन के प्रति दृष्टिकोण को सुधारने का एक प्रयास थी। शिक्षा का उद्देश्य आत्मा को प्रकाश की ओर मोड़ना है। प्लेटो ने एक बार कहा था कि शिक्षा का मुख्य कार्य ज्ञान को आत्मा में डालना नहीं है, बल्कि आत्मा में छिपी प्रतिभा को सही वस्तुओं की ओर निर्देशित करके सामने लाना है। शिक्षा पर प्लेटो की यह व्याख्या उनके शिक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डालती है और पाठकों को उनके शिक्षा के सिद्धांत के प्रभावों को प्रकट करने के लिए उचित दिशा में मार्गदर्शन करती है।

मुख्य शब्द– प्राचीन राजनीतिक दार्शनिक, प्लेटो, शिक्षा सिद्धांत

Introduction

प्लेटो, वास्तव में, पहले प्राचीन राजनीतिक दार्शनिक थे जिन्होंने प्रथम अकादमी अथवा विश्वविद्यालय की स्थापना की या उच्च पाठ्यक्रम शुरू किया या शिक्षा के बारे में बात की। शिक्षा पर यह जोर एथेंस में तत्कालीन प्रचलित शिक्षा प्रणाली के कारण ही सामने आया। प्लेटो ज्ञान खरीदने की प्रथा के ख़िलाफ़ थे, जो उनके अनुसार मांस और पेय खरीदने से भी जघन्य अपराध था। प्लेटो का राज्य नियंत्रण वाली शिक्षा प्रणाली में दृढ़ विश्वास था। जिसे वर्तमान की लोक कल्याणकारी शिक्षा का ही एक प्रकार समझा जा सकता है। प्लेटो, का विचार था कि शिक्षा के बिना, व्यक्ति उस रोगी से अधिक कोई प्रगति नहीं कर पाएगा जो अपने विलासितापूर्ण जीवन जीने के तरीके को छोड़े बिना अपने स्वयं के प्रेमपूर्ण उपचार से खुद को ठीक करने में विश्वास करता है। इसलिए, प्लेटो ने कहा कि शिक्षा जमीनी स्तर पर बुराई को छूती है और जीवन के प्रति पूरे दृष्टिकोण को बदल देती है।

शिक्षा के माध्यम से ही न्याय के सिद्धांत को उचित रूप से कायम रखा गया। आदर्श राज्य में न्याय के संचालन के लिए शिक्षा सकारात्मक उपाय थी। प्लेटो का मानना था कि बुराइयों की जड़ मुख्य रूप से अज्ञानता में है, इसलिए केवल उचित शिक्षा से ही किसी को एक नेक इंसान में बदला जा सकता है।

प्लेटो के शिक्षा सिद्धांत का मुख्य उद्देश्य व्यक्तिवाद पर प्रतिबंध लगाना, अक्षमता एवं अपरिपक्वता को समाप्त करना तथा कुशल का शासन स्थापित करना था। जन सामान्य की भलाई को बढ़ावा देना प्लेटोनिक शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य था। प्लेटो स्पार्टन शिक्षा प्रणाली से बहुत प्रभावित था, हालाँकि पूरी तरह से नहीं। एथेंस में शिक्षा प्रणाली निजी तौर पर नियंत्रित थी, स्पार्टा के विपरीत जहां शिक्षा राज्य–नियंत्रित थी। स्पार्टन युवाओं को सैन्य भावना के लिए प्रेरित किया गया और शैक्षिक प्रणाली को इस उद्देश्य के लिए तैयार किया गया था। हालाँकि, प्रणाली में साक्षरता के पहलू का अत्यंत अभाव

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 04, April 2022

था। दिलचस्प बात यह है कि कई स्पार्टन न तो पढ़ सकते थे और न ही लिख सकते थे। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि स्पार्टन प्रणाली ने मनुष्य में किसी भी प्रकार की बौद्धिक क्षमता उत्पन्न नहीं की, जिसके कारण प्लेटो ने स्पार्टन शिक्षा को एक हद तक त्याग दिया। शिक्षा की प्लेटोनिक प्रणाली वास्तव में एथेंस और स्पार्टा के संगठन का मिश्रण है। इसका कारण यह है कि प्लेटो मानव व्यक्तित्व के एकीकृत विकास में विश्वास करता था।

प्लेटो पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए एक मजबूत राज्य–नियंत्रित शिक्षा में विश्वास करता था। उनका विचार था कि प्रत्येक नागरिक को अनिवार्य रूप से किसी विशेष वर्ग, अर्थात शासक, सैनिक या उत्पादक वर्ग में फिट होने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। हालाँकि, शिक्षा प्रारंभिक चरण में बिना किसी भेदभाव के सभी को प्रदान की जानी चाहिए। प्लेटो ने कभी भी सही ढंग से नहीं कहा कि शिक्षा प्रणाली उन लोगों के लिए तैयार की गई थी जो आदर्श राज्य के शासक बनना चाहते हैं और इस विशेष पहलू ने व्यापक आलोचना को आकर्षित किया।

प्लेटो का मानना था कि शिक्षा कम उम्र से ही शुरू होनी चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चे अच्छी तरह से पढ़ाई करें, प्लेटो ने इस बात पर जोर दिया कि बच्चों का पालन–पोषण अच्छे और स्वस्थ वातावरण में किया जाए और उस माहौल में सच्चाई और अच्छाई के विचार विकसित हों। प्लेटो का मानना था कि प्रारंभिक शिक्षा साहित्य से संबंधित होनी चाहिए, क्योंकि इससे आत्मा का सर्वोत्तम विकास होगा। अध्ययन अधिकतर कहानी कहने से संबंधित होना चाहिए और फिर कविता पर जाना चाहिए। दूसरा संगीत और तीसरा कला प्रारंभिक शिक्षा के विषय थे। प्लेटो व्यक्ति को संस्कारित करने की दिशा में आवश्यक कदम के नियमन में विश्वास रखता था। अधिक सुविधा के लिए, प्लेटो की शिक्षा प्रणाली को मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है– प्रारंभिक शिक्षा और उच्च शिक्षा।

प्लेटो का विचार था कि प्रथम 10 वर्षों तक मुख्यतः शारीरिक शिक्षा होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, बच्चों के शरीर और स्वास्थ्य को विकसित करने और उन्हें किसी भी बीमारी के प्रति प्रतिरोधी बनाने के लिए प्रत्येक स्कूल में एक व्यायामशाला और खेल का मैदान होना चाहिए। इस शारीरिक शिक्षा के अलावा, प्लेटो ने उनके चरित्र में कुछ निखार लाने और आत्मा और शरीर को अनुग्रह और स्वास्थ्य प्रदान करने के लिए संगीत की भी सिफारिश की। प्लेटो ने गणित, इतिहास और विज्ञान जैसे विषय भी निर्धारित किये। हालाँकि, इन विषयों को कविता और गीतों में ढालकर पढ़ाया जाना चाहिए और बच्चों पर थोपा नहीं जाना चाहिए। ऐसा इसलिए है, क्योंकि प्लेटो के अनुसार, मजबूरी में अर्जित ज्ञान की मस्तिष्क पर कोई पकड़ नहीं होती है। इसलिए, उनका मानना था कि शिक्षा को मजबूर नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इसे एक प्रकार का मनोरंजन बनाना चाहिए क्योंकि इससे शिक्षक बच्चे के मन की प्राकृतिक तरीके से समझने में सक्षम हो जाएगा। प्लेटो ने नैतिक शिक्षा पर भी जोर दिया।

प्लेटो के अनुसार, एक बच्चे को एक परीक्षा देनी चाहिए जो यह निर्धारित करेगी कि उसे 20 वर्ष की आयु में उच्च शिक्षा प्राप्त करनी है या नहीं। जो लोग परीक्षा में असफल हो गए उन्हें व्यापारियों, क्लर्कों, श्रमिकों, किसानों और जैसे समुदायों में गतिविधियाँ करने के लिए कहा गया था। परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों को शरीर और दिमाग में अगले 10 वर्षों की शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त होगा। इस

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 01, Issue 04, April 2022

स्तर पर, भौतिक और गणितीय विज्ञान के अलावा, अंकगणित, खगोल विज्ञान, ज्यामिति और द्वंद्वात्मकता जैसे विषय पढ़ाए जाते थे। 30 वर्ष की आयु में फिर से, छात्रों को एक और परीक्षा देनी होगी, जो उन्मूलन परीक्षण के रूप में कार्य करती है, जो पहले परीक्षण की तुलना में बहुत अधिक गंभीर होती है। जो सफल नहीं हुए वे राज्य के कार्यकारी सहायक, सहायक और सैन्य अधिकारी बन सकते हैं। प्लेटो ने कहा कि उम्मीदवारों को उनकी क्षमताओं के आधार पर एक विशेष क्षेत्र सौंपा जाएगा। परीक्षा उत्तीर्ण करने वालों को द्वंद्वात्मकता में 5 साल की अतिरिक्त शिक्षा प्राप्त होगी ताकि यह पता लगाया जा सके कि कौन खुद को इंद्रिय बोध से मुक्त करने में सक्षम है। शिक्षा व्यवस्था यहीं समाप्त नहीं हुई। डायलेक्टिक्स में व्यावहारिक अनुभव के लिए उम्मीदवारों को अगले 15 वर्षों तक अध्ययन करना पड़ा। अंततः 50 वर्ष की आयु में, जिन्होंने शिक्षा की कठिन और तेज़ प्रक्रिया का सामना किया, उन्हें अपने देश और साथी प्राणियों पर शासन करने के अंतिम कार्य से परिचित कराया गया।

इन राजाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपना अधिकांश समय दार्शनिक गतिविधियों में व्यतीत करें। इस प्रकार, पूर्णता हासिल करने के बाद, शासक केवल राज्य के सर्वोत्तम हित में ही सत्ता का प्रयोग करेंगे। आदर्श राज्य साकार होगा और उसके लोग न्यायपूर्ण, ईमानदार और खुश होंगे।

संदर्भ सूची–

1. Plato: Republic Book, David Sansone, Cambridge University Press
2. Plato's Republic, A Word by Word Guide to Translation (Vol. 1: Chapters 1-12) BrownWalker Press, Drew Arlen Mannetter, Drew Arlen Mannetter ISBN:9781627345231, 162734523X 2015
3. पाश्चात्य दर्शन, 15 फ़रवरी 2022 विमल अग्रवाल, SBPD Publications Agra
4. ग्रीक एवं मध्यकालीन दर्शन, विमल अग्रवाल 2021 SBPD Publications Agra